हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा वन-महोत्सव का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान, शिमला द्वारा दिनांक 06.07.2017 का पॉटर हिल, शिमला स्थित संस्थान के पश्चिमी हिमालय शीतोष्ण वन वाटिका में 68वें वन-महोत्सव का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री प्रदीप भारद्वाज, उप-अरण्यपाल ने निदेशक महोदय एवं अन्य उपस्थित लोगों का स्वागत किया । कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान के निदेशक, डा. वी.पी. तिवारी ने विधिवत पूजा अर्चना कर फेगड़ा (*Ficus palmata*) का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया ।

इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान, शिमला के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों के अतिरिक्त विश्व प्रकृति निधि, शिमला इकाई के सदस्यों, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयों के छात्रों व स्थानीय ग्रामीणों द्वारा बुरांस (*Rhododendron arboreum*), बान (*Quercus leuchotrichophora*), तथा फेगड़ा (*Ficus palmata*) जा कि इस क्षेत्र के स्थानीय पौधें हैं, का पौध रोपण किया गया ।

वन महोत्सव के अवसर पर अपने सम्बोधन में डा. वी.पी. तिवारी ने कहा कि मानव जीवन में वृक्षों का विशेष महत्व है और वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए देश भर में प्रति वर्ष जुलाई में आयोजित किया जाता है । आज की दुनिया समस्याओं से गिरी हुई है । इन समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या है, प्राणी संसार और वनस्पति जगत के बीच बिगड़ता हुआ संतुलन । जनसंख्या की बेतहाशा बढ़ोतरी ने इस संतुलन को बिगाड़ा है और हमारे लिए आर्थिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएं उत्पन्न कर दी है। उन्होंने कहा कि वन और जल अक्षय स्त्रोत होते हैं, जब ये नहीं रहते तो सदा बहने वाली नदियां सूख जाती है, बांधों में पानी का स्तर घट जाता है, बिजली का उत्पादन रूक जाता है तथा नहरों में पानी कम हो जाता है। इससे अनाज कम पैदा होता है और उद्योगों के लिए सकट पैदा हो जाता है। इससे भयानक स्थिति का सामना करने के लिए जनसंख्या को कम करने के साथ-साथ वृक्षारोपण के अभियान को भी युद्ध स्तर पर चलने की आवश्यकता है।

वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निदेशक ने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं यह मानव द्वारा छोड़े गए कार्बन डाईऑक्साइड गैस को खींच लेते हैं और हमें ऑक्सीजन देते हैं और इसलिए भविष्य में वातावरण को संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्ष लगाना आवश्यक है। वृक्ष ही भूमि को बंजर होने से राकते हैं तथा हमें अनेक औषधिया प्रदान करते हैं। वनों का पर्यावरण प्रदूषण, जिसे

भविष्य में एक ज्वलंत समस्या के रूप में देखा जा रहा है, को रोकने में भी अहम भूमिका रहती है। राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसा देश के कुल भाग में से 33 प्रतिशत भाग वनों के अधीन होना चाहिए। यह तभी संभव है जब देश का हर नागरिक वृक्षारोपण एवं वृक्षो की देखभाल के प्रति जागरूक हो। डॉ. तिवारी ने यह भी कहा कि आज जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या वैश्विक समस्या के रूप में उभर कर सामने आ गई है। ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव के कारण पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है। कोयला, पैट्रोल आदि जीवाशय ईंधन का प्रयोग, खेती में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग आदि गतिविधियों से हम ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि कर रहे हैं। अतं में उन्होंने उपस्थित जन समूह से आहवान किया कि केवल पौधे लगाकर ही हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता है बल्कि इनका संरक्षण करना भी एक अहम मुद्दा है। इसलिए पौधे लगाने के साथ-साथ इनकी देख–रेख का जिम्मा भी लेना होगा।

इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान, डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने उपस्थित जन–समूह को संस्थान की मुख्य गतिविधियों से अवगत करवाते हुए कहा कि यह संस्थान दो हिमालयी राज्यों, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू–काश्मीर में वानिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके प्रमुख कार्यो में, रई (सिल्वर फर) तथा तोश (स्प्रूस) प्रजातियों की अप्राकृतिक/कृत्रिम पुनर्जनन तकनीक का विकास एवं मानकीकरण, शकुधारी (कोनिफर) तथा चौड़ी पत्ती (ब्रॉड–लीव्ड) वाले वृक्ष प्रजातियों, औशधीय पौधों तथा शुश्क मरूस्थल की स्थानीय प्रजातियों की बीज, पौधशाला तथा पौधरोपण की तकनीकों का विकास एवं मानकीकरण, चीड़ प्रजाति के बीजात्पादन क्षेत्र, सीडलिंग सीड ऑर्चर्ड, शीशम प्रजाति के क्लोनल सीड ऑर्चड, राश्ट्रीय उद्यान व वन्यजीव अभयारण्यों में पादप–विविधता का अध्ययन, देवदार, चीड़, कैल, सैलिक्स तथा कुछ प्रजातियों की बीमारियों, नश्वरता नियंत्रण के लिए कीट प्रबंधन रणनीति, हिमाचल प्रदश में स्थापित विभिन्न जल विधुत परियोजनाओं का पर्यावरण प्रभाव आकलन अध्ययन तथा पर्यावरण प्रबंधन योजना का प्रारूप हिमाचल प्रदेश्ंा के उच्च परिर्वतनशील क्षेत्रों में जलवायु परिर्वतन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए औशधीय पौधे संरक्षण क्षेत्रों की स्थापना सम्मिलित है । संस्थान लोगो में पर्यावरण जागरूकता एवं शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु प्रश्ंाक्षण भी प्रदान करता है।

जीवन के आधार तीन
आओ मिलकर इन्हें बचाएं
देश को खुशहाल बनाएं
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

कार्यक्रम के अंत में श्री सत्य प्रकाश नेगी, अरण्यपाल ने विश्व प्रकृति निधि, शिमला ईकाई के सदस्यों, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के छात्रों स्थानीय ग्रामीणों व हिमालयन वन अनुसंधान सस्थान के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों का वन महोत्सव समारोह में सम्मिलित होकर अपना योगदान देने हेतु धन्यवाद किया तथा आशा व्यक्त किया कि संस्थान को भविष्य में भी उनका सहयोग इसी तरह से मिलता रहेगा।

मी डया कवरेज

फेगड़ा रोपा वन महोत्सव मनाया

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान, शिमला द्वारा पाटरहिल, शिमला में 68वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक, डा. वीपी तिवारी ने फेगड़ा का श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाला पौधा लगा कर किया। इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान, शिमला के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों के अतिरिक्त विश्व प्रकृति निधि, शिमला इकाई के सदस्यों, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयों के छात्रों व स्थानीय ग्रामीणों ने पौधारोपण किया गया। उपस्थित लोगों द्वारा बुरांस, बान तथा फेगड़ा जो कि इस क्षेत्र के स्थानीय पौधे हैं का रोपण किया । वन महोत्सव के अवसर पर डा. वीपी तिवारी ने कहा कि मानव जीवन में वृक्षों का विशेष महत्त्व है और पौधारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए देश भर में प्रति वर्ष जुलाई में आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान, डा. कुलराज सिंह कपूर ने लोगों को संस्थान की मुख्य गतिविधियों से अवगत करवाते हुए कहा कि यह संस्थान दो हिमालयी राज्यों, हिमाचल और जम्मू-कश्मीर में वानिकी के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसके प्रमुख कार्यों में, रई 'सिल्वर फर- तथा तोष 'सप्रूस- प्रजातियों की अप्राकृतिक, कृत्रिम पुनर्जनन तकनीक का विकास एवं मानकीकरण, शंकुधारी 'कोनिफर- और चौड़ी पत्ती 'ब्रॉड-लीव्ड- वाले वृक्ष प्रजातियों, औषधीय पौधों तथा शुष्क मरूस्थल की स्थानीय प्रजातियों की बीज, पौधशाला तथा पौधरोपण की तकनीकों का विकास एवं मानकीकरण, शीशम प्रजाति के

■ हिमालयन अनुसंधान कर्मियों ने रोपे विभिन्न प्रजाति पौधे

क्लोनल सीड ऑर्चड, राष्ट्रीय उद्यान व वन्यजीव अभयरण्यों में पादप-विविधता का अध्ययन, देवदार, चीड़, कैल, सैलिक्स तथा कुछ प्रजातियों की बीमारियों, नश्वरता नियंत्रण के लिए कीट प्रबंधन रणनीति, हिमाचल प्रदेश में स्थापित विभिन्न जल विधुत परियोजनाओं का पर्यावरण प्रभाव आकलन अध्ययन तथा पर्यावरण प्रबंधन योजना का प्रारूप हिमाचल प्रदेश के उच्च परिवर्तनशील क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए औषधीय पौधे संरक्षण क्षेत्रों की स्थापना तथा लोगों में पर्यावरण जागरूकता एवं शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

दिव्य हिमाचल Fri, 07 July 2017
epaper.divyahimachal.com//c/20355216

अमर उजाला

पोर्टल हिल में वन महोत्सव

शिमला। राजधानी के पंथाघाटी स्थित हिमालय वन अनुसंधान ने वीरवार को समरहिल के पोर्टल हिल में 68वां वन महोत्सव मनाया। निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने फेगड़ा का पौधा लगाकर वन महोत्सव का शुभारंभ किया।

संस्थान के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों के अलावा विश्व प्रकृति निधि, शिमला इकाई के सदस्यों, प्रदेश विश्वविद्यालयों के छात्रों और स्थानीय ग्रामीणों ने भाग लिया। इस मौके पर उप अरण्यपाल प्रदीप भारद्वाज ने सभी का स्वागत किया। डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि मानव जीवन में वृक्षों का विशेष महत्व है और वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए देश भर में प्रति वर्ष जुलाई में यह कार्यक्रम करवाया जाता है। इस मौके पर संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने उपस्थित जन-समूह को संस्थान की गतिविधियों से अवगत करवाया। वन महोत्सव अंत में अरण्यपाल सत्य प्रकाश नेगी मौजूद रहे। **ब्यूरो**

पौधरोपण | एचएफआरआई ने स्थानीय संस्थाओं के साथ पॉटरहिल में मनाया वन महोत्सव

पौधे लगाकर उनकी देखरेख भी जरूरी

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान शिमला की ओर से वीरवार को पॉटरहिल में 68 वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने श्रेष्ठ अनुवांशिक गुणों वाले पौधे फेगड़ा को रोपित कर किया।

इस मौके पर संस्थान के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों के अतिरिक्त विश्व प्रकृति निधि, शिमला इकाई के सदस्यों व एचपीयू के छात्रों, स्थानीय ग्रामीणों ने बुरांस, बान, फेगड़ा और इस क्षेत्र के स्थानीय पौधों का रोपण किया गया। वन महोत्सव क अवसर पर डॉ वीपी तिवारी ने कहा कि आज की दुनिया समस्याओं से घिरी हुई है। इन समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या प्राणी संसार और वनस्पति जगत के बीच बिगड़ता हुआ संतुलन है। उन्होंने कहा कि भविष्य में वातावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधे लगाना आवश्यक है। इसलिए पौधे लगाने के साथ-साथ इनकी देख-रेख का जिम्मा भी लेना होगा।

वन महोत्सव में पौधरोपण के बाद पूजा करते डॉ वीपी तिवारी और अन्य लोग।

इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक अनुसंधान डॉ कुलराज सिंह कपूर ने कहा कि यह संस्थान दो हिमालयी राज्यों हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर में वानिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। हिमाचल प्रदेश में स्थापित विभिन्न जल विद्युत परियोजनाओं का पर्यावरण प्रभाव आकलन अध्ययन तथा पर्यावरण प्रबंधन योजना का प्रारूप हिमाचल प्रदेश के उच्च परिवर्तनशील क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए औषधीय पौधे संरक्षण क्षेत्रों की स्थापना और लोगों में पर्यावरण जागरूकता एवं शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण भी प्रदान करना है।

कार्यक्रम के अंत में अरण्यपाल सत्य प्रकाश नेगी ने विश्व प्रकृति निधि, शिमला इकाई के सदस्यों, एचपीयू के छात्रों स्थानीय ग्रामीणों व हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों का वन महोत्सव में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए धन्यवाद किया।

पौधरोपण के साथ 68वें वन महोत्सव का शुभारंभ

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

समरहिल के समीप पोटरहिल में वन महोत्सव का आगाज वीरवार को हुआ। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 68वें वन महोत्सव का शुभारंभ टूरिस्ट डेस्टीनेशन पोटरहिल में औषधीय पौधे रोप कर किया। संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि मानव जीवन में वृक्षों का विशेष महत्व है और पौधरोपण को प्रोत्साहन देने के लिए देश भर में प्रति वर्ष जुलाई में आयोजित किया जाता है। वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. वीपी तिवारी ने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं। डॉ. तिवारी ने कहा कि आज जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या वैश्विक समस्या के रूप में उभर कर सामने आ गई है। ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव के कारण पृथ्वी के तापमान में वृद्धि हो रही है। कोयला, पेट्रोल आदि जीवाश्म ईंधन का प्रयोग, खेती में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग आदि गतिविधियों से हम ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि कर रहे हैं।

✔ हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने पोटरहिल में किया आगाज

इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने संस्थान की मुख्य गतिविधियों से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि वन महोत्सव के दौरान औषधीय पौधों तथा शुष्क मरूस्थल की स्थानीय प्रजातियों की बीज, पौधशाला तथा पौधरोपण की तकनीकों का विकास एवं मानकीकरण, चीड़ प्रजाति के बीजोत्पादन क्षेत्र, सीडलिंग सीड ऑर्चर्ड, शीशम प्रजाति के पौधे रोपे गए।

शिमला : हिमाचल वन अनुसंधान संस्थान में आयोजित वन महोत्सव के दौरान पौधा लगाते अधिकारी। (नरेश)

पंजाब केसरी ई-पेपर Fri, 07 July 2017
epaper.punjabkesari.in//c/20354559